बनास जन

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

शताब्दी स्मरण : हरिशंकर परसाई

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. के. सी. शर्मा, चित्तौड़गढ़
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

आवरण चित्र : अवधेश वाजपेयी, जबलपुर (राजकमल प्रकाशन के कैलेण्डर से साभार)

सहयोग राशि : 200 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–225 रुपये
400 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–425 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात		5
स्मृतियों में परसाई		
हरिशंकर परसाई : एक पुनर्खोज यात्रा	राजेन्द्र चन्द्रकान्त राय	9
वे हमें आत्मनिरीक्षण करना सिखाते हैं	विजय बहादुर सिंह	25
आत्मालोचन : हरिशंकर परसाई के लेखन की ताकत	सेवाराम त्रिपाठी	31
परसाईजी का सानिध्य	वीरेन्द्र मोहन	37
हरिशंकर परसाई : सच की दोधारी तलवार	विजय गुप्त	42
हरिशंकर परसाई : दृष्टि संपन्न संपाती वह	महेश कटारे	45
परसाईजी मार्फत बड़ी बुआ	प्रहलाद अग्रवाल	49
कृतियों का पाठ		
प्रारंभिक लेखन की बानगी	सची शुक्ला	53
दोहरे मापदंडों के बीच स्त्री	निवेदिता सिंह	57
ज्वाला और जल : सबाल्टर्न समाज के प्रति सहानुभूति	लोकेश कुमार गुप्ता	61
इनाम के विरुद्ध, बोलने के साथ	असीम अग्रवाल	66
विसंगतियों में छिपी व्यंग्य कथा : सदाचार का ताबीज	विनीत काण्डपाल	69
चुनौती देती 'रानी नागफनी' की कहानी	यवनिका तिवारी	73
परसाई : मिथक से समाज तक	उज्ज्वल शुक्ला	77
छठे दशक का लोकवृत्त और परसाई की लुकाठी	आनंद पांडेय	81
राह दिखाती पगडंडियाँ	रविरंजन कुमार	86
चेतना पर चोट करने वाले रचनाकार	ललित श्रीमाली	90
नया ढंग पर वही तेवर : परसाई की व्यंग्य-कथाएँ	साहिल कैरो	93
निठल्लेपन का दायित्वबोध	पवन साव	96
उपेक्षित विधा में स्मरणीय रचनाएँ	अवंतिका केसरवानी	100
परसाई की परसाइयत : शिकायत मुझे भी है	मानवेन्द्र प्रताप सिंह	104
बीमारियों की चपेट में जनतंत्र	गौरव सिंह	109
यह ठिठुरता हुआ गणतंत्र हमारा	मेधा नैलवाल	113
जन-संवाद का प्रयत्न करती व्यंग्य कथाएँ	धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	117
हरिशंकर परसाई के व्यंग्य : घाव करे गंभीर	भारती जैन	124
विकलांग श्रद्धा और राजनीति	प्रज्ञा त्रिवेदी	128
भारतीय समाज का आईना	राजवंती	132
दो नाक वाले लोग : फूल भी है शूल भी	आलोक रंजन पांण्डेय	135
तुलसीदास चंदन घिसैं : अपने समय की खोज खबर	अतुल चतुर्वेदी	138
व्यंग्य से विवेकीरकण का सफर	लौह कुमार	142
हम विषपायी जनम के	सूरज कुमार	147
जाने पहचाने लोगों के बीच परसाई	प्रियदर्शिनी	152
ढर्रे की सोच के विरुद्ध	आशीष कुमार सिंह	156
ज्ञान बोध में सत्य का सफरनामा : 'आवारा भीड़ के खतरे'	नामदेव	162
ढो रहा आदमी काँधे पे खुद का सलीब	लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता	168

दो कृतियों की यात्रा

हरिशंकर परसाई और उनकी वसुधा	राजेन्द्र शर्मा	171
ऐसे लिखा गया 'इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर'	हिमांशु राय	174

पत्र

कमला प्रसाद के नाम परसाई के पत्र	प्रस्तुति : आशीष त्रिपाठी	178

स्तंभकार परसाई

परसाई के स्तम्भ और समसामयिक संदर्भ	वीरेन्द्र सिंह	184
कबिरा खड़ा बाजार किंवा 'मुक्त बाजार' में	शिरीष मौर्य	192
पूछो परसाई से	श्याम सुशील	198

कहानीकार परसाई

कहानीकार हरिशंकर परसाई	बलराज पांडेय	201
परसाई की कहानियों में विडंबना और वैचारिकी	रीता सिन्हा	208
हरिशंकर परसाई की कहानियाँ : यथार्थ एवं व्यंग्य	रामकली सराफ	214
परसाई की कहानियों में ज्ञान और संवेदना	सिंधु टी आई	226
पलड़े पर परसाई	जितेन्द्र जीतू	231
व्यवस्था की गहरी चुनौतियों से लड़ता कथाकार	अरबिन्द कुमार साह	236
वर्ग-भेद की विडंबना और हरिशंकर परसाई	चन्द्रशेखर कुशवाहा	241

परसाई का कथेतर

जोखिम उठाकर लोकतंत्र को बचाने का जोखिम	मधुरेश	249
गर्दिश से निखरते लेखक का आत्मकथ्य	प्रियम अंकित	256
परसाई का संस्मरण लेखन	ऊर्जा श्रीवास्तव	260
खास समय का प्रतिबिंब	श्रुति कुमुद	264
फ्रेम से बाहर के निबंध	अभिलाष कुमार गोंड	268
गणतंत्र का प्रहरी : हरिशंकर परसाई	अभिजीत सिंह	274

व्यंग्य की अजस्र धारा

परसाई की परसाइयत	काशीनाथ सिंह	280
परसाई ने बनाई यह प्रतिरोध की परंपरा	प्रियदर्शन	282
प्रगतिशील आंदोलन में हरिशंकर परसाई का महत्त्व	अजय वर्मा	286
परसाई का लेखन	रेखा सेठी	291
हमारे समय में परसाई की आवाज	अरविन्द त्रिपाठी	296
प्रच्छन्नता का उद्‌घाटना और परसाई का व्यंग्य	मुक्तेश्वरनाथ तिवारी	306
इतिहास, मिथक और परसाई	रेणु व्यास	312
मीडिया और परसाई की प्रासंगिकता	ललित मोहन रयाल	325
हरिशंकर परसाई के लेखन का स्त्री पक्ष	अवन्तिका शुक्ला	330
'नर्मदा के तट से' वह 'अघोर भैरव'	मलय पानेरी	343
सुधीजन के हितार्थ : परसाई के सरोकारी व्यंग्य के निहितार्थ	विमलेश शर्मा	349
वैष्णव की फिसलन यानी धर्म का धंधे में बदलना	अनुपम कुमार	357
दलित विमर्श के परिप्रेक्ष्य में परसाई	प्रमोद मीणा	360
गांधीवादियों की शव परीक्षा बरास्ते परसाई	सरिता तिवारी	371

परिशिष्ट : परसाई की जीवन यात्रा 376

अपनी बात

हरिशंकर परसाई (22 अगस्त 1924--10 अगस्त 1995) स्वतंत्र्योत्तर भारत के सबसे बड़े लेखक हैं। प्रारम्भिक जीवन में शिक्षक और वन विभाग की नौकरियाँ करने के बाद परसाई पूरावक्ती लेखक हो गए। इसके साथ साथ लेखक संगठन और सांस्कृतिक सक्रियता के लिए आवश्यक समझे जाने वाले अनेक कार्य करते रहे। पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उन्होंने विवाह नहीं किया था सो लेखन और संगठन के लिए उन्होंने अपने को समर्पित कर दिया। अपने लेखन के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी ने सम्मानित किया तथा भारत सरकार ने पद्मश्री प्रदान किया। पूरे जीवन रचना कर्म को अपनी जिम्मेदारी समझने वाले परसाई की अनेक कृतियाँ लोकप्रिय हुईं। उनके निबंध और कहानियाँ पाठ्यक्रमों के अनिवार्य हिस्से बने तो उनके लिखे वाक्यों को सूक्तियों सरीखा दर्जा भी मिला। प्रतिदिन लिखने वाले परसाई के गद्य में हास्य और व्यंग्य अनिवार्यतः होते हैं लेकिन उनका लेखन अत्यंत गंभीर कर्म है। उनका लेखन आजादी की आधी सदी का निर्मम मूल्यांकन करता है और कभी कभी तो वे भविष्यवेत्ता की तरह दिखाई देते हैं। उनके लेखन की इस ताकत का असल कारण गहरी लोक संपृक्ति है। जीवन में गहराई से धँसे बिना जीवन की परतों को न देखा जा सकता है और न उन्हें खोलना ही संभव है।

प्रेमचंद के बाद परसाई को पाठकों से सबसे अधिक प्यार मिला। परसाई ने अखबारों के लिए नियमित लिखा ताकि वे अपने उन पाठकों तक जा सकें जो रिक्शा चलाते हैं, स्कूलों में पढ़ते हैं या साधारण जीवन जीते हैं। परसाई मूलतः कथाकार हैं जिनकी कहानियाँ इतनी बेबुनावट होती हैं कि उन्हें निबंध भी समझा जा सके। निबंध कही जानी वाली उनकी रचनाओं में कथा तत्त्व ही पाठकों को बाँधे रखता है। पाठक उनकी रचनाओं को पढ़कर मुस्कुराते हैं, सोचने लगते हैं, तिलमिला जाते हैं या लोटपोट हो जाते हैं लेकिन इन सबमें वे परसाई से अभिन्न हो जाते हैं। एक ऐसे देश में जहाँ सम्पूर्ण साक्षरता ही चुनौती की बात समझी जाती हो वहाँ सम्पूर्ण शिक्षा बड़ा सपना है। परसाई अपनी रचनाओं के माध्यम से यह चुनौती उठाते हैं। ध्यान देने की बात यही है कि नैतिक शिक्षा का छौंक-बघार लगाए बिना वे अपना काम करते हैं। साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन कहें या शिक्षा या उसे स्वयं में ही उद्देश्य मानें लेकिन परसाई को पढ़ते हुए आप साहित्य के इन सभी उद्देश्यों को छोड़कर बेहतर मनुष्यता का सपना देख सकते हैं। मनुष्यता का ऐसा संसार जहाँ गरीबी न हो, छुआछूत न हो, मामूली